।। ओ३म् ।।

तप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगाण गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गाण गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महान हैं और वह प्रतिभाशाली हैं और वह इस संसार के एक-एक कण-कण में व्याप्त हैं तो हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुण-गान गाते रहते हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा सीमा से रहित हैं और वह सीमा में आने वाले नहीं हैं इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणो का गुण-वादन करते रहे हैं। हमारे यहां ऋषि-मुनि एक-एक वेद मन्त्र को ले करके अन्वेषण करते रहे हैं और ज्ञान और विज्ञान की प्रायः उड़ाने उड़ते रहते हैं। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान नितान्त माना गया है जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ही विचार विनिमय करता रहा है और अन्वेषण करता रहा है कि वह परमपिता परमात्मा की महिमा और उसकी महानता में उसके विज्ञान में रत्त हो जाऊं।

तप की व्याख्या

तो आओ बेटा! आज का हमारा वेद-मन्त्र यह कह रहा है यम ब्रह्मा वर्णस्सुतम देवत्वाम लोकाम भवि वह तम मानों वह परमपिता-परमात्मा

Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj Patrika Febraury 2012

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वस्व जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिंड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरंगें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन् मैं तो सँसार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस सँसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि सँसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह सँस्कार जमते चले जायेंगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है, क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अँकुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका श्रोत्र ही नष्ट हो जाये और वह श्रोत्र उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्त्र में दृष्टिपात करूँगा और मोन हो जाऊँगा कि सँसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

(पुष्प संख्या 13 प्रवचन दिनाँक 1 नवम्बर 1969)

पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 473 समग्र अंक : 548
वर्ष : 40 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद गुरुदेव	1
2.	तप	पूज्यपाद गुरुदेव	3-16
3.	महर्षि वाजश्रवा का याग	पूज्यपाद गुरुदेव	17-33
4.	उद्बोधन	पूज्य महर्षि महानन्द जी	34
5.	दान, सूचना इत्यादि		35-36

चतुर्वेद पारायण ब्रह्म-महायाग

परमपिता परमात्मा की अनुकम्प कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभ आर्शीवाद से श्री गांधी धाम समिति (पंजी.) प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी **दिनाँक 26 फरवरी 2012 से 4 मार्च 2012** तक चतुर्वेद पारायण ब्रह्म-महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द सँस्कृत महाविद्यालय के प्रागंण में बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ आप सबके सहयोग से आयोजित कर रही है। अतः आप सभी अपने सम्बन्धियों व मित्रो सहित सम्मिलित होने की कृपा करें।

श्री गांधी धाम समिति (पंजी.)

ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान होता है वह यह विचारता है कि मेरे विद्यालय से प्रदूषण का जन्म न हो तो वह ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा देते हैं और वह कहते हैं ब्रह्मचरिष्यम ब्रह्मा ब्रह्मण ब्रह्मे क्रतम देवा हे ब्रह्मचारियों! तुम ब्रह्मवर्चोसी बनों और ब्रह्म का अपने में चिन्तन करो ब्रह्म को अपने में विचार-विनिमय करने का प्रयास करो। **ब्रह्मचारी कहते ही उसे हैं जो ब्रह्म और चरी दोनों को जानने के लिये तत्पर होता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरी कहते हैं प्रकृति को।** जब प्रकृति और ब्रह्म को जानने में लग जाता है वह तो ब्रह्मचरिष्यामी कहलाता है। तो इसी प्रकार जब वेद का ऋषि ब्रह्मचारियों को इस प्रकार अपना उपदेश देता है और उच्चारण करता है कि जनन्म ब्रहा क्रतम मानों वेद का मन्त्र यह कहता है कि अपने में तुम ब्रह्मवर्चोसी बन जाओ। एक-एक श्वांस की प्रत्येक गति को मानों ब्रह्म में पिरोने का प्रयास करो। एक सूत्र बना लो क्योंकि जब तक एक सूत्रित तुम्हारा जीवन नहीं होगा मन, कर्म, वचन का एक सूत्र नहीं बनेगा तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकेगा।

याग के लिये प्रेरणा

तो मेरे प्यारे! देखो यह उनका एक उपदेश प्रारम्भ हो रहा था तो उस समय मुनिवरो देखो उन ब्रह्मचारियों के मध्य में एक ब्रह्मचारी उपस्थित हुए जिनका नाम **यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी थे जो गार्गेपथ्य गोत्र में जिनका जन्म हुआ था।** तो मेरे प्यारे देखो ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! आप याग के लिए हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं कि याग करो। हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि हम याग कैसे करें? तो मुनिवरो देखो ब्रह्मचारी को याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि तुम एक स्थली पर विद्यमान हो जाओ और विद्यमान हो करके तुम अपने में याग का अपना विचार बनाओं। जैसे हमारे यहां सत्यकामाम भूतम ब्रह्मे वाचस्तुम देवा जैसे ऋषि देखो वाजश्रवा ने अपने जीवन को यागमय बनाया, जैसे मानों सत्यकाम ने अपने आत्मा के

अमूल्य और देवत्वम को प्राप्त होता रहता है। तो हम मुनिवरो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में ही मानों तपो में परणित हो जाएँ। प्रत्येक मानव के हृदय में एक आकांक्षा लगी रहती है क्या मैं तपो में परणित हो जाऊँ और मैं तपो में अपने को ले जाऊँ। तो विचार आता रहता है कि तपम भू वक्षणम् मानों **तप किसे कहा जाता है?** तो वेद का आचार्य कहता है कि तप कहते हैं **जो अपनी इन्द्रियों को तपो में निष्ठ बना लेता है अथवा अपनम ब्रह्मे मानों अपने आत्मा को ब्रह्म में और ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करता वही इन्द्रियों के ऊपर संयमी, तो यह हमारे यहाँ तप कहा जाता है।**

याग

तो आओ बेटा! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की विवेचना करने लगता हूँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके नाना प्रकार का यशोगान गाते रहते और वह नाना प्रकार की आभा में परणित होते हुए मेरे पुत्रो यागाम भूतम ब्रह्मा वह ब्रह्मचारियों को प्रातः कालीन नैतिक-शिक्षा में परणित करते हुए कहा करते हे ब्रह्मचारियों! तुम आओ अपने में याज्ञिक बन जाओ। क्योंकि याग ही संसार में सर्वत्र जीवन है, क्योंकि प्रत्येक मानव याग से पिरोया हुआ है। तो हमारे आचार्यों ने कहा कि **जितना भी आत्मीय कर्म है अथवा जितना भी मानव की मौलिकता को ले जाने वाला श्रोत्रिय कर्म कहलाते हैं उन सबका नाम याग कहा गया है। याग कहते हैं जहां मानव को ऊर्ध्वा में शिक्षा प्राप्त होती है याग कहते है जितना भी सुकर्म है सर्वत्र का नाम याग माना गया है।** एक विज्ञानवेत्ता है वह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ता रहता है और उसमें विचार-विनिमय करता हुआ अन्वेषण कर रहा है। वह याग कर रहा है। एक माता अपने गर्भस्थल में अपने शिशु को अपनी लोरियो का पान कराती मानों उसे नाना प्रकार की आभा में परणित कर रही है

तो वह भी याग कर रही है। एक मानव देखो प्राणायाम कर रहा है प्राण को अपान में प्रवेश कराता है और प्राणो में प्राण की अपने में मानों देखो अवृत्तियों को दृष्टिपात कर रहा है वह भी याग कर रहा है। एक मानव देखो अग्नि देवता को देवताओं का मुखारबिन्दु स्वीकार करता है, उसमें स्वाहा देता है वह भी याग कर रहा है। तो मुनिवरो देखो एक मानव अपनी साधना के लिए गऊआम भूतम ब्रह्मे अपनी गऊओं की सेवा कर रहा है। हमारे यहां नाना प्रकार के रूपों में नाना प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन होता रहा है। हमारे यहां गौ नाम इन्द्रियों को कहा गया है। जो गौ नाम की इन्द्रियों को संयम में लाता है उनके ज्ञान और विज्ञान में परणित होता है वह देखो अपने में आध्यात्मिक-याग कर रहा है।

याज्ञिक

तो आओ बेटा देखो मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। यहाँ नाना रूपों में बेटा देखो जब ब्रह्मचारी याज्ञिक बन जाता है, ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है वर्चसुतम ब्रह्मा लोकाम वह वर्चस्वी कहलाता है। तो आओ बेटा देखो मुझे स्मरण आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते हुए बोले हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो और यागाम तपम ब्रह्मणां व्रतम देवा हे ब्रह्मचारी! तुम तपो में परणित हो जाओ क्योंकि संसार का एक-एक कण अपने में तपायमान रहता है। एक-एक कण-कण में मानों देखो मानों तप की सुगन्ध आती रहती है तुम भी अपने में, तपों में ही निष्ठ हो जाओ। जैसे राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए तपो में परणित हो जाता है और तप करता है। देखो जैसे यहाँ नाना राजा इस प्रकार के जिन्होनें तप किया है और तप से अपने राष्ट्र को उन्नत बनाया है इसी प्रकार तुम भी अपने में तपस्वी बनों। तो मेरे प्यारे! देखो जैसे वह ब्रह्मचारी को याग का उपदेश दे

रहे थे क्या तुम याज्ञिक बनो और अपनी विचारधारा को याग में परणित कर जाओ प्रत्येक मानव।

प्रदूषण

देखो जब भी जिस भी काल में समाज में प्रदूषण आता है या प्रदूषण की प्रतियाँ उत्पन्न होती हैं तो वह विचारो से होती हैं। सबसे प्रथम मानव के प्रत्येक गृह में विचार होना चाहिए जब विचारों में विकृतता आ जाती है विचारों में दूषितपन आ जाता है ब्रह्मचर्य भ्रष्ट हो जाता है तो मानव की प्रदूषण की प्रतिभा का जन्म होना प्रारम्भ हो जाता है। तो इसलिए वेद के आचार्यो ने कहा है कि प्रत्येक मानव को अपने यहाँ देखो याज्ञिक होना चाहिए। मुझे बेटा वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान राम प्रातः-कालीन मानों अपने गृह में याग करते और मानों देखो ऋषि-मुनि भी विद्यमान होते तो राम का यह उपदेश चलता कि राजा का राष्ट्र वह पवित्र बनता है जिस राजा के राष्ट्र में प्रातःकालीन प्रत्येक गृह में मानों देखो नाना प्रकार की सुगन्धियों का व्यवधान होता हो और वह सुगन्धि एक नये विचारों की सुगन्धि है। तो कहीं मानों वेद-मन्त्रों की ध्वनियो की सुगन्ध आ रही है, कहीं साकल्य की सुगन्धि है जो अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है। तो भगवान राम यह कहा करते थे क्या अयोध्या में यह घोषणा होनी चाहिए क्या **प्रत्येक गृह में मानों तीन प्रकार की सुगन्ध होनी चाहिए।** सबसे प्रथम मानों देखो उसके विचारों की सुगन्धि और द्वितीय सुगन्धि वेद-मन्त्रों की ध्वनि होनी चाहिए और तृतीय सुगन्धि मानों साकल्य अग्नि में परणित होना चाहिए। तो मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं उस काल की विवेचना करने लगता हूँ या वह काल स्मरण आता रहता है तो प्रत्येक गृह में बेटा देखो याग होते और सुगन्ध होती मानों देखो प्रदूषण का अभाव हो जाता। तो विचार आता रहता है कि प्रत्येक गृह में प्रत्येक मानव के हृदय में विचार की प्रतिभा आनी चाहिए। मेरे प्यारे देखो विद्यालयों में जब आचार्य

तो मानों देखो पिण्डाकार का निर्माण करने वाला है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है और उस बिन्दु में मानों देखो तेजोमयी है, तरलत्व है और गुरूत्व है मानों देखो उस समय उसका पिण्ड बनना प्रारम्भ होता है। वह पिण्डाकार बन करके बेटा निर्माण करने वाला वह मेरा प्रभु निर्माण करता है। मानों देखो माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियो का निर्माण होता है। कहीं बेटा देखो हृदय का निर्माण हो रहा है, कहीं लघु-मस्तिष्क में बेटा देखो नाना प्रकार की ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का देखो उसमें तरंगित होती हुई वह मानों देखो ब्रह्माण्ड की प्रतिभा उसमें जन्म ले रही है। तो विचार आता है कि **हृदय भी दो प्रकार के हैं** एक शरीर के मध्य में होता है और एक लघु मस्तिष्क में होता है। तो इसका निर्माण कौन करने वाला है? इसमें बेटा पंच-प्राण हैं पांच-उप-प्राण हैं, पांच-ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पांच-कर्मेन्द्रियाँ हैं, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मानों देखो इसी में निर्माणीत होते है। तो मेरे प्यारे निर्माण करने वाला वह मेरा प्यारा प्रभु है जो निर्माण कर रहा है। निर्माणवेत्ता मानों देखो निर्माण कर रहा है। परन्तु प्रकृति के अव्ययों से निर्माण कहां कर रहा है, माता के गर्भस्थल में मेरे पुत्रो देखो पिण्ड कैसे बन रहा है। मानों पिण्ड में गुरूत्व है, तरलत्व है, तेजोमयी है यह तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर बेटा सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है। जब भी विज्ञानवेत्ता इस संसार में होते हैं तो वह तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं। सबसे प्रथम तेजोमयी उसके पश्चात तरलत्व और गुरूत्व मानों देखो पिण्डो के निर्माण की प्रतिभा आती है। जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो महतत्व से बेटा एक तरंग का जन्म होता है और वहीं तरंगे मानों देखो उस तरंग के गर्भ में नाना प्रकार के परमाणु गति करना प्रारम्भ करते हैं। उसी से मेरे प्यारे वही तरंगे देखो अन्तरिक्ष में जाती हैं और अन्तरिक्ष से वही देखो वह तेजोमयी अग्नि के परमाणाओं में गति लाती हैं और वही देखो तरलत्व पदार्थों को परमाणुओं में गति और मानों वही गुरूत्व में मिश्रण हो करके नाना

कल्याण के लिए षोडश-कलाओं को जानने के लिए उन्होंने अपने जीवन को देखो गऊओं को समर्पित कर दिया था इसी प्रकार तुम अपने में याज्ञिक बनों और यागाम भूतम ब्रहे मानों देखो **याग एक संसार का सबसे महान ऊर्ध्वा में कर्म और क्रियाकलाप माना गया है।** इस विचार को ले करके तुम प्रारम्भ करो। उन्होंने कहा प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा याग में देखो तुम्हारी यज्ञशाला हो और यज्ञशाला में नाना प्रकार के खम्ब होने चाहिए। जैसे मुझे स्मरण है महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब अपने विद्यालय को त्याग करके ब्रह्मचर्य-क्षेत्र में गये मानों देखो विज्ञानवेत्ता बने और विज्ञानवेत्ता बन करके उन्होंने चौबीस खम्बों की यज्ञशाला का निर्माण किया और मानों क्योंकि हमारा जो मानवीय शरीर है उन्होंने कल्पना की क्या हमारा शरीर भी मानों देखो चौबीस खम्बो वाला है। इसमें दस प्राण हैं, दस इन्द्रियाँ है, मन, बुद्धि और चित्त अहंकार कहलाते हैं यह सर्वत्र मानों प्रकृति का मंडल आ जाता है। इसी प्रकार उन्होंने कल्पना करते हुए कहा इस प्रकार की यज्ञशाला होनी चाहिए जो चौबीस खम्बों वाली हो और चौबीस कोणो वाली होनी चाहिए। मेरे प्यारे देखो जब उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्मे और उसमें नाना प्रकार का साक्ल्य होना चाहिए। सबसे प्रथम उसमें मधु साकल्य में मधुपन होना चाहिए, सुगन्धित होना चाहिए और रोगनाशक होना चाहिए और अमृतम ब्रह्मा वह सुगन्धम् ब्रह्मे यह नाना प्रकार के साकल्य पौष्टिक साकल्य होना जिससे देखो उनकी तरंगे वायु मण्डल में परणित हो जिससे वह जो प्रदूषण है वह समाप्त हो जाएँ। इस प्रकार का ऋषि ने बेटा अपना मन्तव्य दिया। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी इस प्रकार देखो तुम्हारी यज्ञशाला में साकल्य होना चाहिए और साकल्य के द्वारा मानों देखो अग्न्याधान हो समिधाओं के द्वारा अग्न्याधान हो करके और तुम कहो सबसे प्रथम प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके तुम हुत प्रारम्भ करो जिस हूत के द्वारा तुम्हारा जीवन वास्तव

में कल्याण को प्राप्त हो जाए और तुम्हारे गृह में सुगन्ध, तुम्हारे गृह में देखो मानवीयता का प्रसार हो जाए।

निर्वाचन

इस प्रकार देखो जब ऋषि ने कहा तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ऐसा वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! अमृतम ब्रह्मा उन्होंने कहा उसमें **निर्वाचन** होना चाहिए एक उदगाता हो, एक अध्वर्यु हो और यजमान होना चाहिए वह ब्रह्मत्व को ब्रह्मा पद का अमृत को प्राप्त होना चाहिए। इस प्रकार मानों देखो अपना उद्गीत गाने वाला देखो उद्गीत गाता रहता है। वह जटा पाठ गाता है, घन पाठ गाता है और वह उदात्त और अनुदात्त में गान गाता हुआ माला पाठ को प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार देखो जब यज्ञ का प्रारम्भ होता है तो उसमें देवताओं की पुरी होनी चाहिए और वह साकल्य मानों देवत्व को प्राप्त होना चाहिए।

अग्न्याधान

मेरे प्यारे! देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! देखो हम यह जानना चाहते हैं क्या याग जैसे आप ने यह वर्णन किया है देखो यज्ञशाला हो और उसमें देखो इतने खम्बें हों प्रभु साकल्य भी होना चाहिए परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि हम याग करना चाहते हैं परन्तु देखो यह सुविधा यदि न प्राप्त हों तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें यह सुविधा न प्राप्त हों तो तुम मानों देखो अपने यहां देखो समिधाओं को ले करके अग्न्याधान करो और अग्नि प्रदीप्त करते हुए कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हुत प्रारम्भ करो। मानों देखो वह तुम्हारी समिधाओं के द्वारा याग करो समिधा अग्नि में प्रदीप्त करो और यह कहो प्राणाय स्वाहा प्राण को प्राप्त होनी चाहिए अपान को प्राप्त होनी चाहिए क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड है यह नाना प्रकार के प्राणो से

सुशोभित हो रहा है मानों उसी में निहित हो रहा है तो इस प्रकार तुम याग में प्रारिप्त हो जाओगे।

जल के द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने कहा तो ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कहीं मानों देखो ऐसी स्थली पर चले जायें जहां भगवन् देखो समिधा भी हमें प्राप्त न हों और अग्नि भी न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह भी, यदि समिधा तुम्हें न प्राप्त हो तो तुम मानों जल को अंजलि में लो और जल से कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उसे अमृतम उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि जल ही मानों अमृत है यह सर्वत्व कहलाता है और यह जल को अंजलि में ले करके तुम स्वाहा उच्चारण करते रहो और उसे जल के द्वारा ही जल को प्रोक्षण कहते हैं। विचार आता रहता है कि तुम जल के द्वारा अंजलि में ले करके उसको प्रोक्षण करो उसको स्वाहा कह करके देवताओं को प्रदान करते रहो क्योंकि यह जल है यही तो पिण्ड का प्रतिनिधि कहलाता है। जब भी मानों किसी भी प्रकार का देखो पिण्डाकार बनता है वह जल के द्वारा ही मानों देखो उसका प्रारम्भ होता है। मेरे प्यारे देखो उन्होंने कहा जलान्धम् वर्ण ब्रह्मा जल को अंजलि में ले करके याग करो।

पृथ्वी की रज से याग

तो मुनिवरो ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह भी मैनें आचार्यों ने मुझे वर्णन कराया है। मैं यह जानना चाहता हूँ भगवन् कहीं जल भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें जल भी कहीं प्राप्त न हो तो तुम पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके तुम प्रारम्भ करो। क्योंकि यह तो तुम्हारा गुरूत्व है यही

उत्तराणम ब्रह्मे मानव को उत्तरायण में जाना चाहिए दक्षिणायन को त्याग देना चाहिए। बेटा देखो दक्षिणायन कहते हैं अन्धकार को और उत्तरायण कहते हैं प्रकाश को। मेरे प्यारे! देखो हमारे जीवन में दो ही पक्ष होने चाहिए। हमारा जीवन उत्तरायण में होना चाहिए। उतरायण कहते हैं पराविद्या को धारण करना और दक्षिणायन कहते हैं देखो यह संसार की अमृतियों विद्याओं को अज्ञान में प्रवेश होना। तो अज्ञान को त्यागो और प्रकाश में जाने का प्रयास करो।

आओ बेटा! देखो आज का विचार हमारा क्या कह रहा है। आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल सूक्ष्म सा परिचय यह है कि **हमें अपने में याज्ञिक बनना चाहिए।** मेरे प्यारे! देखो यज्ञशाला हो पवित्रतम देखो जैसे ब्रह्मपुरी होनी चाहिए और यदि यज्ञशालाम ब्रह्मे बेटा! समिधाएं होनीं चाहिए समिधा न हो तो जल को अंजलि में लेकर के याग करो, जल न हो तुम देखो पृथ्वी की रज को ले करके याग करो और पृथ्वी की रज न हो तो अपने मन-मस्तिष्क को एकाग्र करके एकान्त-स्थली में विद्यमान हो करके वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाओ। श्रद्धाम भूतम ब्रह्मा श्रद्धा के द्वारा हृदय को हृदय से मिलान करते हुए मुनिवरो परमात्मा को प्राप्त हो जाओ। यह है बेटा आज का वाक्। **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हम अपने जीवन में हमारा मानवता को पाने का सदैव प्रयास करें और अपने वेद-मंत्रो का उद्गीत गाते हुए मानों अपने जीवन को उज्जवल बनाए, पवित्र बनाए।** देखो वेदाम प्रकाशाम भूतम ब्रह्मा व्रतपते यह जो वेदम ब्रह्मा है यह वेद ही तो प्रकाश है, वेद ही तो मानव को ऊंचा बनाने वाला है। **वेद नाम प्रकाश का है और उस प्रकाश के गर्भ में बेटा! तीन प्रकार की विद्या विद्यमान है ज्ञान, कर्म और उपासना मानों देखो ज्ञान में ऋत् है और मुनिवरो कर्म में यजु है और साम में मुनिवरो देखो उपासना मानी गई है।**

प्रकार के लोक-लोकान्तरों का निर्माण हो जाता है। वह निर्माण करने वाला बेटा मानों तेजोमयी वह प्रभुत्व कहलाता है तो ब्रह्माण्ड की रचना हो जाती है। तो विचार आता रहता है, यही तो गुरूत्व है, यही तो विज्ञान है जिसके ऊपर मानव देखो अपने विज्ञान की धारा में रत्त होता रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम यदि अमृतम ब्रह्मा तुम्हें कोई वस्तु प्राप्त न हो तो तुम जल को मानों जल न हो तो तुम पृथ्वी के परमाणु वह गुरूत्व को ले करके कहो प्रणाय स्वाहा क्योंकि जितना भी पिण्ड का निर्माण होता चाहे वह माता के गर्भस्थल में है, चाहे वह मानों शिशु के रूप में है, चाहे और भी नाना प्रकार के प्राणियों के रूप में हो, चाहे लोक-लोकान्तरों के रूप में हो तो बेटा वह निर्माण मानों देखो तीन प्रकार के परमाणुओ से हो रहा है और यह ही तीन प्रकार की प्रतिभाओं को ले करके विज्ञान उसी में रत्त हो रहा है तो वह परमपिता-परमात्मा देखो उनका स्वामित्व कहलाया गया है। तो विचार आता है बेटा पृथ्वी की रज का लेकर के कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और अव्रतम ब्रह्मा, व्रतम और वह उदानाय स्वाहा कह करके बेटा चित्त का मण्डल आ जाता है। तो विचार आता रहता है आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा जितना भी यह ब्रह्माण्ड है नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा है जो माला बनी हुई है और वह एक सूत्र में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात होता है। बेटा प्राण में भी जब श्वांस की गति प्रारम्भ होती है तो वहां भी देखो गुरूत्व है तरलत्व है और तेजोमयी यदि यह परमाणु नहीं होंगें तो मानव श्वांस की गति को प्राप्त नहीं होगा। मानव देखो वायु मण्डल में इसी प्रकार की प्रतिभाओं का जन्म होता रहता है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! देखो हम इन वाक्यों को जान करके अपने ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाए।

आत्मा का याग

मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! यह भी वाक् देखो मैने स्वीकार किया। यह मेरे आचार्य-जन मुझे बाल्यकाल में मुझे सर्वत्र विद्याओं का अध्ययन कराते रहे हैं। हे प्रभु मैं यह जानना चाहता हूँ भगवन् यदि मानों देखो यह पृथ्वी की रज भी वह कहीं प्राप्त न हों ऐसी स्थली पर चले जायें और हमें याग करना है तो कैसे करें? उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! यदि तुम्हे याग करना है और कहीं मानों तुम्हें पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो तो तुम वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो न्यौदा में वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाते हुए प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, वसुनम ब्रह्म वर्ण देवत्वाम ब्रह्मे वाचस्सुतम नाना प्रकार के वेद-मन्त्र तुम्हारे कण्ठों में सुशोभित होने चाहिए और एकन्त स्थली में विद्यमान हो करके तुम अपने में **भहतरी वाणी** में उद्गीत गाना प्रारम्भ करो और प्रारम्भ करते हुए मानों देखो कहो क्या प्राणम ब्रह्मा व्रतम देवम ब्रह्मा व्रतम स्वाहा ऐसा उद्गीत गाते हुए चले चलो और वेद-मन्त्र क्योंकि इससे तुम्हारे अंग-संग का वायुमण्डल तुम्हारा पवित्र हो जायेगा। जैसा मैनें तुम्हें कई कालों में वर्णन किया क्या देखो **महर्षि काग-भुषण्ड जी ने देखो अपने जीवन में लगभग देखो बारह अनुष्ठान किए थे और देखो बारह अनुष्ठानो में याग करते रहे** और याग करने से ही मुनिवरो देखो उनके अंग-संग का वायुमण्डल पवित्र हो गया, प्रदूषण से रहित हो गया जब साधना साधक की मुनिवरो देखो सिद्ध हुआ करती है। विचार आता रहता है क्या मुनिवरो देखो जब काग-भुषण्ड जी बाल्य-काल में तो माता स्नेहलता यह कहती रहती अमृत ब्रह्मा देवत्वाम हे पुत्र! तुम्हें याज्ञिक और योगेश्वर बनना है क्योंकि माता उसे प्रायः शिक्षा देती रहती थी। विचार आता रहता है बेटा! महर्षि लोमश मुनि के सम्पर्क में आकर के उनका जीवन पवित्र बन गया। माता की वही आज्ञा होती है जो मानों देखो वेदाम् भूतम ब्रह्मा लोकाम व्रतम मेरे प्यारे देखो इस

प्रकार का मैं विचार देना नहीं चाहता हूँ। मैं किसी की ऋषि की देखो वह उनकी गाथा का वर्णन नहीं केवल यह कि उन्होंने अपने जीवन में कितने ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप किए हैं। विचार आता रहता है बेटा देखो यहां अमृतम देखो उन्होंने कहा कि तुम वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाते रहो और एकन्त स्थली में विद्यमान होकर के याग करो क्योंकि वह अपने **आत्मा का याग है।** जिससे मुनिवरो देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार एकाग्र करते हुए मुनिवरो देखो मन-मस्तिष्क को उस समय तुम वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाओगे तो तुम वेद-मन्त्र दृष्टा हो जाओगें। **मन्त्र द्रष्टा उसे कहते हैं** जब मन, मष्तिष्क एकाग्र होता है और मन्त्र को उच्चारण कर रहे हैं और मन्त्रो में जो गुण है वह गुण देखो उस ऋषि के समीप देखो आने प्रारम्भ हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो वेदाम् भूतम ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्सुतम ब्रह्मे तो यही बेटा देखो हमारा उद्गीत वेद-मन्त्रों का। तो वेद का ऋषि कहता है कि हे ब्रह्मचारी! तुम याज्ञिक बनो और तुम मृत्यु से पार होने का प्रयास करो क्योंकि संसार में जब तुम्हारा अनुष्ठान तुम्हारा पवित्र होगा तो तुम्हारे जीवन में ज्ञान होगा, प्रकाश होगा और जब प्रकाश होगा तो मृत्यु से तुम पार हो जाओगे और यदि तुम्हारे जीवन में अन्धकार होगा और अन्धकार अन्धकारम भूतम अज्ञान होगा तो मृत्यु हो गई और मृत्यु ही मुनिवरो देखो अन्धकार को त्यागने के लिए मानव परम्परागतों से प्रयास करता रहा है इसलिए जीवन में अन्धकार नहीं होना चाहिए, मृत्यु नहीं होनी चाहिए। मृत्यु उसे कहते हैं जो अज्ञान है, अज्ञान नहीं रहना चाहिए तो इसीलिए मानव को ज्ञान और विज्ञान में परणित होते हुए ही परमात्मा को स्मरण करते हुए और मानों वेदों का उद्गीत उसका ज्ञान-विज्ञान हमारे समीप होना चाहिए। तो आओ बेटा देखो मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट नहीं करूगा केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए जैसा यज्ञदत ब्रह्मचारी ने अपने आचार्य से प्रश्न किया और महर्षि ने उसका उत्तर दिया तो

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से कहा हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि मैं मोक्ष को जानना चाहता हूँ, मोक्ष में प्रवेश करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि ऐसा तुम्हारे विचार में क्यों आया? उन्होंने कहा कि यह मानव की एक पिपासा बनी रहती है प्रत्येक मानव अपने में देखो शान्त होना चाहता है। प्रत्येक आत्मा, आत्मवेत्ता मानों यह चाहता है कि मैं संसार को जान करके उसमें समा जाऊं। तो प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि मैं उसमें समाहित होना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों विचार आया? उन्होंने कहा कि प्रत्येक मानव प्रत्येक परमाणु अपने में रत्त हो रहा है। जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो एक-एक परमाणु मानों देखो द्वितीय परमाणु का निर्माण करता रहता है और निर्माण करके वह संसार एक पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आने लगता है। जिस प्रकार माता के गर्मस्थल में हमारे शरीर रूपी पिण्ड का निर्माण हुआ है। निर्माण करने वाला वह चैतन्यदेव है परन्तु वह जो माता के गर्भ-स्थल में एक पिण्ड का निर्माण हुआ। परन्तु तरलत्व पदार्थ के द्वारा ही पिण्ड का निर्माण होता है गुरूत्व अपनी आभा में रत्त रहने वाला है। तो इसी प्रकार मेरी भी एक पिपासा बनी हुई है क्या मैं मानों देखो पिण्ड रूप को न चाह करके व्यापक रूप अपना बनाना चाहता हूँ।

याग की विवेचना

मेरे पुत्रों! देखों महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहा क्या हे वाजश्रवा! तुम्हारा जो गोत्र है उद्दालक गोत्र है और उद्दालक गोत्र में बहुत से ब्रह्मवेत्ता हुए हैं और उन ब्रह्मवेत्ताओं में तुम्हारी उत्सुकता बनी हुई है। उन्होनें कहा प्रभु! मेरी इच्छा यही है कि मैं ब्रह्मवेत्ता बनू परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहां **सम्भवा ब्रह्मेण ब्राहा** उन्होंने कहा कि तुम याग करो। महर्षि वाजश्रवा ने कहां प्रभु! यह मेरी परम्परा से ही एक अभिलाषा बनी हुई है। हमारे पूर्वजों की भी यह एक इच्छा बनी हुई है क्या मैं मानों देखो ब्रह्मणे उन्होंने याग किया। याग के ऊपर अन्वेषण

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूगा। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते इस संसार-सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या **प्रत्येक मानव बेटा! उस परमपिता-परमात्मा की महिमा को निहारता रहे उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारण करता हुआ इस संसार-सागर से पार हो जाए।** यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। अब वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्यां मना दधिः वाचन्नमः।
ओ३म् यशश्चाहं ब्रह्मणा वाचस्वर्णं आभ्यां देवाः।
ओ३म् मधु मन्था मायशश्चाहं आपाः।

अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनाँक : 14-जून-1992
स्थान : लाजपत नगर, नई दिल्ली

❐❐

।। ओ३म्।।

महर्षि वाजश्रवा का याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारें यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांण्ड के मूल में वह परमपिता-परमात्मा विद्यमान हैं। इसीलिए हमारा प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेद-मन्त्र इस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणानुवादन करते रहते हैं और उसके गुणों का वर्णन करते हुए परमपिता-परमात्मा की महिमा को निहारते रहते हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा में आने वाला नहीं हैं वह सीमा से रहित है तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गान गाते रहते हैं और उसकी महिमा को निहारते रहते, विचारते रहते हैं कि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसकी महिमा प्रायः महानता में सदैव गमन करती रहती है। तो आओ मुनिवरों हम उस

परमपिता-परमात्मा की महिमा और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः हम अपने में विचार-विनिमय करते रहें।

आत्मा को प्रेरणा

आज का वेद-मन्त्र कह रहा था वेदम् ब्रह्मणा व्रतम् देवम् आत्मा वेदमन्त्र कह रहा है हे आत्मा! तू महान उस देव के समीप चल और तू अपनी चेतना से चेतना का मिलान कर जिस चेतना के चेतना से मिलान होते ही मानवीय अपनी चेतना में जब तत्पर हो जाता है तो उसी में वह समाहित हो जाता है। तो हमारे वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार की वार्ताएं आती रहती हैं। मानव यह विचारता रहता है कि मन ब्रह्मणा व्रतम् देवाः हमारे आचार्यों ने बेटा इसके ऊपर बहुत अन्वेषण किया और विचार-विनिमय किया और ऋषि-मुनि अपने में विचार-विनिमय करते अपने में समाहित होते रहे हैं और समाहित हो करके ही मानों अपने में समाहित हो करके अपने में मौन हो जाते हैं। तो आओ मुनिवरों देखो इस सम्बन्ध में आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूंगा। आज का विचार केवल यह कि हम तुम्हें एक स्थली में ले जाना चाहते हैं जहाँ साहित्यिक विचार आता रहता है और साहित्यिक विचार-वेत्ताओं ने नाना प्रकार के महापुरूषों की प्रतिभा का प्रायः वर्णन किया है।

महर्षि वाजश्रवा की पिपासा

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब मैं उद्दालक गोत्र के ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों में जब प्रवेश होता हूँ तो उनका क्रियाकलाप कितना महानता में रहा है। बेटा! एक समय वाजश्रवा अपने आसन पर विद्यमान हैं और वाजश्रवा मानों अपने ऋषि-मुनियों के समीप विद्यमान थे। मानों देखो जिसमें महर्षि विभाण्डक, महर्षि भृंगी, महर्षि श्वेता स्वन्धनी मानों यह सब विद्यमान थे। तो वाजश्रवा अपने आसन पर विद्यमान हो करके कुछ वार्ता प्रगट कर रहे थे। उन्होंने

ब्रह्म-सूत्रों में पिरोने वाला होता है वह ब्रह्मचारी है। मानों देखो जब एक-एक श्वांस गति कर रहा है और वह श्वांस का मनका बना करके ब्रह्म सूत्र में पिरोता है वहीं तो ब्रह्मचारी है **ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मणाए तत्वम् ब्रह्म** और वही ब्राह्मण कहलाता है। परन्तु देखो ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मचारी वह है जो चरी और ब्रह्म को दोनों को एक रूप में दृष्टिपात करता है वही तो ब्रह्मचारी है। मेरे प्यारे! देखो यह उच्चारण करके ऋषि ब्रह्मचारी मौन हो गया। जब ब्रह्मचारी मौन हो गया तो पिता ने कहा कि मेरा ब्रह्मचारी महान बनेगा। परन्तु देखो उसी वाक् को ले करके वह शान्त हो गये।

याग

उन्होने अपने यहां सुन्दर शिल्पकारों से यज्ञशालाओं का निर्माण कराया और यज्ञशालाओं का जब निर्माण हो गया तो ऋषि-मुनियों को निमन्त्रण दिया और उन्होनें निमन्त्रण दे करके बेटा महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उस याग के उदगाता बनें और वैशम्पायन उस याग के ब्रह्मा बनें और मुनिवरों देखो उनके वाचसुति ब्रह्मचारी बेटा वहां ब्रह्मणे पुरोहित बन करके याग प्रारम्भ किया। स्वयं यज्ञमान बनें और यज्ञमान बन करके जब याग का प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने बेटा वेद-मन्त्रों में ब्रह्मसुजम ब्रह्म चित्रम रथम ब्रह्मा चित्रम देवम ब्रह्मा क्रतम देवा असुकी दिव्याम भूतम ब्रह्मा मानों देखो उन्होंने वैशम्पायन से ये कहा कि यजमान के व्रतों होने से क्या हे प्रभु! वेदमन्त्र यह कहता है कि अग्नि की धाराओं हेतू मानों देखो चित्रों का गमन होता रहता है और वह द्यौ-लोक में प्रवेश होते रहते हैं तो क्या प्रभु यह तरंगवाद है या विज्ञानवाद है यह आध्यात्मिक विज्ञान है या भौतिक विज्ञान है। उस समय वैशम्पायन ने कहा कि देखो चित्राम् भुतम ब्रह्मे वायु स्तंभ यह जो वायु में मानों चित्र हमारें अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके जब यह चित्र रमण करते रहते हैं तो वह चित्राम गतम ब्रह्मा मानों देखो द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं, द्यौ में उनकी निष्टा बन जाती है रथम्

करना उनका कर्तव्य बना रहा है तो इसीलिए मैं भी याग करने के लिए तत्पर हूँ परन्तु **याग कहते किसे है?** महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि द्रव्य का उपयोग करने का नाम, सदुपयोग करने का नाम याग है। उन्होंने कहा प्रभु याग कि मैं और विवेचना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हूत और प्रहुत का नाम भी याग माना गया है। उन्होंने कहा हुत-प्रहुत किसे कहते हैं? उन्होंने कहा **हुत कहते हैं आहुति देने को, प्रहुत कहते हैं मानों देखो पुरोहितों की आज्ञा का पालन करना।** अमृताम भुतम ब्रह्मा वेदाम ब्रह्मे पुरोहिता और वह पुरोहित कहलाते हैं जो पराविद्या के देने वाले हैं। जैसे परमपिता-परमात्मा का नाम पुरोहित है और वह परा में रमण करने वाला ऐसे **जो महापुरूष होते हैं वह पुरोहित कहलाते हैं।** मेरे प्यारे उन्होंने कहा बहुत प्रिय परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि मेरे विचार में तो वही अमृतम पुरोहित है।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि वाजश्रवा ने कहा प्रभु याग किसे कहते है? उन्होने कहा याग उसे कहते हैं जो आध्यात्मिकवाद को जानने वाला है प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में, समान को उदान में जो मिलान कराना जानता है वह पांच ज्ञानेन्द्रियों को और कर्मेन्द्रियों के विषयों को ले करके प्राण में हुत कर देता है और जब प्राण में हूत कर देता है तो मानों वह आत्मा में आत्मा का याग करने वाला है **वह आध्यात्मिक याग कहलाता है।** जो ज्ञान रूपी अग्नि में मानों देखो अपने साकल्य, इन्द्रियों का सर्वत्र साकल्य बना करके उसमें हुत करने वाला है उसे आध्यात्मिक याग कहते हैं। मेरे पुत्रों उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज याग क्या है? उन्होंने कहा **जितने भी सुक्रिया-कलाप है उन सर्वत्र का नाम याग है। सुविचार बनाना, संकल्प में रहना और प्रभु की सृष्टि को निहारना ही मानों देखो याग कहा गया है।** मेरे पुत्रों! देखो जब महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उनका उत्तर देते रहे तो ऋषि ने यह निश्चय किया कि हे प्रभु! मैं मोक्ष की अभिलाषा वाला हूँ मैं अपने को मानों देखो याग

में परणित कराना चाहता हूँ और मैं याग में हूत करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा बहुत प्रिय तुम याग करो।

मोक्ष की पगडंडी

तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या वाजश्रवा ने यह निश्चय कर लिया कि जितना मेरे द्वारा द्रव्य है उस द्रव्य को मानों देखो हुत और प्रहुत में मुझे परणित करना है। मेरे प्यारे देखो वाजश्रवा ने यह निश्चय करते हुए पुनः विभाण्डक से यह प्रश्न किया कि महाराज इससे क्या मुझे मोक्ष प्राप्त हो जायेगा? उन्होंने कहा नहीं ऋषिवर एक मार्ग तुम्हें प्राप्त होगा और उस मार्ग में तुम्हारी तीव्र इच्छा होनी चाहिए। तीव्र जब प्रक्रिया बन जायेगी जब तीव्र इच्छा हो जायेगी तो तुम्हारा तुम्हें मार्ग प्राप्त होगा और उसमें प्राण और अपान को मिलान करने का प्रयास होगा। यहाँ मन और प्राण का दोनों का समन्वय हो जाएगा **मन मानों देखो आत्मा का प्रतिनिधि है और प्राण ब्रह्म का प्रतिनिधि है** दोनो का जब मिलान होगा तुम्हें मानों देखो तुम्हारा चित्त मण्डल निष्क्रिय होना प्रारम्भ हो जायेगा वह संस्कारों से रहित हो जायेगा। तो इसलिए तुम्हारा जीवन एक महान और पवित्रता में परणित हो जायेगा मोक्ष की पगडंडी तुम्हें प्राप्त हो जायेगी। मेरे पुत्रों देखो विभाण्डक मुनि महाराज और ऋषि का, उद्दालक गोत्र के वाजश्रवा का ऐसा ही विचार-विनिमय हो रहा था।

ब्रह्मवर्चोसी

विचार-विनिमय होते इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि वैशम्पायन का भी आगमन हो गया और वैशम्पायन दोनों महापुरूषों को दृष्टिपात करके बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन ने कहा क्या विचार-विनिमय हो रहा है ऋषिवर? महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि प्रभु! हम ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करते रहे हैं, हम ब्रह्मवर्चोसी बनने की हमारी इच्छा बनी हुई है कि ब्रह्मवर्चोसी बनें। मेरे प्यारे! देखो

उन्होनें कहा प्रभु ब्रह्मवर्चोसी किसे कहते है? तो महर्षि वैशम्पायन ने यह कहा तो ऋषि कहते हैं विभांण्डक जी, क्या हे प्रभु! इसको तो हम भी जानना चाहते हैं। उन्होने कहा मेरे विचार में तो यह है कि ब्रह्म और वर्च मानों ब्रह्म और चरी-चरी नाम प्रकृति का ब्रह्म नाम परमात्मा का है और वह ब्रह्म और चरी दोनों में परणित होना, दोनों को जानने का नाम, दोनों को यथायोग्य जान करके इसको वर्चस्व बनना है। मेरे पुत्रों देखो जब ऋषि ने इस प्रकार का उत्तर दिया तो दोनों ऋषि अपने में मौन हो गये। मेरे प्यारे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आ रहा है, ऐसा मुझे स्मरण है कि दोनो ऋषियों का अपना एक विचार-विनिमय हो रहा था। परन्तु सांयकाल को सभा उनकी विसर्जन हो गई और यह निश्चय हो गया कि अमुक समय में यहां यज्ञ होगा और मैं द्रव्य को सर्वत्र याग में हुत करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो जब मैं त्यागी और तपस्वी, त्यागी नहीं बनूंगा तो तप नहीं आयेगा और मैं यदि तप नहीं होगा मेरा द्रव्य से मोह बना रहेगा तो मैं इस मोह के कारण मानों देखो अपने में घोर संस्कारों को जन्म देने वाला बनूंगा। तो यह महर्षि बाजश्रवा ने अपने में निश्चय कर लिया। तो बेटा! देखो सभाम् ब्रव्हे अब उन्होंने अपने गृह में जा करके अपनी दिव्या से बोले हे देवी! मेरा यह मोक्ष को जाने की इच्छा बनी है और मैं सर्वत्र द्रव्य का याग करना चाहता हूँ। उनकी देवी ने कहा प्रभु आप को धन्य है यदि आपके ऐसे विचार बने यह तो हमारा सौभाग्य है। क्योंकि गृह में जहां भी इस प्रकार के विचार बनते हैं तो वह गृह मानों उस गृह का सौभाग्य जागरूक होता है और मानव अपने में मानवीयता की प्रतिभा में रत्त होता है। तो बेटा! देखो वाजश्रवा ने अपनी पत्नि से कहा पत्नि बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता से कहा हे बाल्य! ब्रह्मचारी ब्रह्मचरिस्यामि गतम ब्रह्मणा व्रतम हे ब्रह्मचारी! तुम ब्रह्मचारी हों परन्तु देखो नाचिकता ने कहा क्या प्रभु! मैं ब्रह्मचारी ब्रह्मण सम्ब्रहे अभी मैं पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं बना। उन्होंने कहा क्या त्रुटि है? क्या प्रभु! मेरे पितर ब्रह्मचारी वह होता है जो अपने एक-एक श्वांस को मनका बना करके

दे रहे हैं उनमें से बहुत सी गऊए वृद्ध हैं और वृद्ध वह दुग्ध नहीं देगीं परन्तु देखों उसको देने से आप पाप के स्वामी बने हैं। नचिकेता के वाक्यों को श्रवण करने वाले वाजश्रवा ने कहा, उद्दालक गोत्रीय ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम ब्रह्मचारी हो अमृतम शान्तमभुतम ब्रह्मे। नचिकेता ने कहा प्रभु यह तो मैं स्वीकार कर लूंगा परन्तु मैं भी तो आपकी सम्पदा हूँ मुझे किसे दोगे। वाजश्रवा ने कहा ब्रह्मचारी तुझे मृत्यु को दुंगा और मृत्यु उच्चारण करके ब्रह्मचारी मौन हो गया क्योंकि यह विचारों का अन्तिम विचार होता है। जब मृत्यु के लिए कहा जाता है तो अन्तिम यह सूत्र है यह अन्तिम मानों देखो एक वेद माला का मनका है। यह शब्द मानों देखो अन्तिम चरमसीमा का अन्तिम ब्रहे है। तो यह जब उन्होने अपने में स्वीकार कर लिया तो वाजश्रवा सांयकाल तक दक्षिणा दे करके शान्त हो गये और अपने मानों कक्ष में विश्राम गृह में पहुंच गये। जब विश्राम गृह में पहुंचे तो बालक नचिकेता माता के द्वार पर पहुंचे। माता ने कहा कहो ब्रह्मचारी आज कैसे शोकातुर हो? उन्होंने कहा हे माते-श्री मुझे पिता ने मृत्यु को कहा है और हमारा जो गोत्र है यह उद्दालक गोत्र है उस उद्दालक गोत्र में मानों देखों नाना वंशलज हुए हैं। हमारा जो यह गोत्र है, वंश चल रहा है ये मानों देखो हमारा वंशलज ब्रह्मे यह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र में मानों यह अस्सीवा वंश चल रहा है। हमारा और उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ है वह हरितत गोत्रों से हुआ है उसमें लगभग देखो लाखों वंशलज चले गये और हरितत गोत्र का निकास अंगिरस ऋषि से हुआ है और अंगिरस गोत्र में भी मानों देखो एक लाख वंशलज चले गये हैं। हे प्रभु! अंगिरस ऋषि देखो उनका जो निकास हुआ वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है और अथर्वा में भी मानों देखो लाखो वंशलज चल गये। हे प्रभु! हे मातेश्वरी इनमें कोई ब्रह्मचारी मिथ्यावादी नहीं हुआ जो पिता की आज्ञा का पालन न करने वाला हो और योगेश्वर न हो तो माता मझे पिता की आज्ञा का पालन करना है मुझे उनकी वाणी को स्वीकार करना है। उन्होंने कहा

ब्रह्मा देखो के यजमान का रथ बनकर के भी जाता है ऐसा बेटा उन्होंने अपना मन्तव्य प्रगट किया परन्तु याग प्रारम्भ हो गया। जब **पारायण याग** प्रारम्भ हो गया तो मेरे प्यारे! देखो उनका याग चलता ऋषि-मुनि आते प्रश्न करते रहते परन्तु उनकी सन्तुष्टि की जाती वेद-मन्त्र के द्वारा क्योंकि वेद तो ईश्वर का गान गाता है जैसे माता का पुत्र माता का गान गाता है। बिना पुत्र के देखो माता; माता नहीं, माता ही मानों देखो माता का निश्चय ही उसका पुत्र कराता है। इसी प्रकार मनम् ब्रह्मा मानों देखो जैसे माता की गाथा को गाने वाला पुत्र है जैसे यह पृथ्वी ब्रह्मांण्ड की गाथा गाती है। जब इस संसार में विज्ञानवेत्ता होते हैं तो वह पृथ्वी के ऊपर अन्वेक्षण करते हैं, पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान करते हैं और अनुसन्धान करते हुए मानों देखो प्रथाम् भुतम ब्रह्मा देवम यह माता वसुन्धरा है इसके गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ विद्यमान् रहता है। तो इनको देखो अमृतम ब्रह्मा वही तो अमृत है। यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती है सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक जब भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं उन्होंने अणु और परमाणुओ को जानने का प्रयास किया है तो उन्होने पृथ्वी की वसुन्धरा को जाना है, उसके गर्भ को जाना है और उस वसुन्धरा को जान करके ही मुनिवरों देखो मानव लोक-लोकान्तरो की यात्रा में सफलता को प्राप्त हुआ है।

महर्षि भारद्वाज-मुनि का विज्ञान

मुझे बहुत सा काल स्मरण आता है। भारद्वाज-मुनि का वह जीवन स्मरण आता रहता है जब भारद्वाज-मुनि के यहां ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि दोनों अन्वेक्षण कर रहे थे और अन्वेक्षण करते हुए मानों देखो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो गुरूत्व, तरलत्व और तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणुओं से वाहनों का निर्माण होता है और वह निर्माण हो करके उस पर विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरो को भ्रमण करते। मुझे बेटा

वह काल स्मरण है जब महर्षि भारद्वाज मुनि का देखो यन्त्र अन्तरिक्ष में रमण कर रहा है वह यहां से अपनी उड़ाने उड़ता है पृथ्वी के आश्रम से ऋषि के और वह सबसे प्रथम मानों देखो चन्द्रमा में जाता है चन्द्रमा से अपनी उड़ाने उड़ता हुआ वही यान मेरे प्यारे देखो बुध में जाता है बुध से उड़ान उड़ करके वही शुक्र में जाता है शुक्र से उड़ान उड़ता है वही मंगल में जाता है मंगल से उड़ान उड़ता है तो स्वाति-नक्षत्र में जाता है जब स्वाति से अपनी उड़ान उड़ता है तो वशिष्ट-मंडल में चला जाता है और वशिष्ठ-मंडल से उड़ान उड़ता है तो अरूणधति में प्रवेश हो जाता है अरूणधति-मंडल से उड़ान उड़ता है तो मृचिका-मंडल में प्रवेश करता है मृचिका-मंडल से उड़ान उड़ता है तो रोहिणी-केतु-मंडल में प्रवेश करता है रोहिणी-केतु मंडल से उड़ान उड़ता है तो मुलकेतु-मंडल में प्रवेश कर जाता है मुल-केतु-मंडल से उड़ान उड़ता है तो भामान्तु-मंडल में प्रवेश करता है भामान्तु-मंडल से उड़ान उड़ता है तो अखलेश्वर-मंडल में प्रवेश कर जाता है और अखलेश्वर-मंडल से उड़ान उड़ता हुआ तो मौन-मृचिका में प्रवेश हो जाता है और मौन-मृचिका से अपनी उड़ान उड़ता है तो रोहिणी में प्रवेश हो जाता है जब रोहिणीमंडल से उड़ान उड़ता है तो वह केतु-मंडल में चला जाता है केतु-मंडल से उड़ान उड़ता हुआ बेटा! देखों विचार मैं विशेष नही केवल यह क्या वह देखो बेहत्तर-लोकों का भ्रमण करके वह पुनः भारद्वाज के आश्रम में प्रवेश होता रहा है। तो आज मैं बेटा तुम्हें विज्ञान के युग में नही ले जा रहा हूँ मैं विज्ञान की वार्त्ता तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरों देखो नाना प्रकार के लोकों का अन्त में अपनी उड़ान उड़ता हुआ और अपने में अपनेपन का ही भान करता हुआ और ऋषि अपने में मौन हो जाता है।

याग में दक्षिणा

तो मेरे पुत्रों! देखो आज मैं तुम्हें विशेषता में न ले जाता हुआ केवल यह कि हमारा वेद का मन्त्र, वेद का ऋषि क्या कहता है। वेद

का ऋषि कहता है सम्भवः ब्रह्मणा लोकाम। बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था वाजश्रवा के याग की। मैं विशेष दूरी न चला जाऊँ। विचार-विनिमय यह मुनिवरों देखो यहां इस प्रकार का विज्ञान ऋषि-मुनियों के मष्तिकों में, उनके आश्रम में, उनके क्रियाकलापों में सदैव रमण करता रहा है। तो मेरे पुत्रो देखो मैं याग की चर्चा कर रहा था। जब याग प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! नाना ऋषिवर आते रहे विज्ञान की वार्ता, चित्रों को वर्णन आता रहा। मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण है बेटा **छः माह तक वह याग प्रारम्भ रहा** और छः माह याग के सम्पन्न होने के पश्चात जब पूर्णता को प्राप्त होने लगा तो मुनिवरों देखो वाजश्रवा ने ऋषि-मुनियों से कहा प्रभु! अब क्या कार्य रह गया है शेष। उन्होनें कहा वेद कहता है दक्षिणाम भुतम ब्रह्मे मेरे प्यारे! उन्होंने कहा मैं कौन सी दक्षिणा प्रदान करूँ। उन्होंने कहा दक्षिणाम ब्रह्मणें कृतो सुतेही क्या जो देखो यज्ञमान के हृदय में त्रुटियां हैं उसे प्रदान करो, पुरोहित को दो और यदि त्रुटि तुमने पुरोहित को प्रदान कर दी हैं तो उसमें तुम्हारा आत्म कल्याण होगा और मानों देखों बाह्य पालन-पोषण के लिए द्रव्य भी एक दक्षिणा का रूप है। उन्होंने कहाँ पहले भगवन्। बाह्य जगत में अपने को सिमट जाऊँ तो उन्होंने बेटा देखो नाना मुद्राए और गऊओं के सहित वह दक्षिणाम भूतम ब्राह्मणों को प्रदान करने लगे। उन्होंने बेटा! बहुत सी गऊए जो वृद्ध थी जिनको देने से कोई लाभ नहीं होता। यदि वृद्ध हैं और अपने कार्य से निवृत हो गई हैं उस द्रव्य का दान देना भी मानों वह पाप है जो दुसरों को देने से लाभ नहीं होगा।

नचिकेता वाजश्रवा संवाद

तो मुनिवरों देखो वह सात वर्ष का ब्रह्मचारी नचिकेता विद्यमान है। नचिकेता ने कहा मेरा पिता तो धर्म के स्थान में अधर्म कर रहा है। नचिकेता ने कहा हे पितृ। आप भी देखो जब यह द्रव्य आपकी सम्पदा है गऊ भी सम्पदा है आप जिन गऊओं को ब्राह्मणों को दान

जल का पान करो मैं तुम्हारे प्रश्नों का तुम्हें उत्तर दुंगा। यमाचार्य के वाक् पान करते हुए नचिकेता बड़े प्रसन्न हुए और उन्होने उन्हें अन्न जल का पान कराया। वह प्रसन्न हो गये और प्रसन्न हो करके उन्होंने यह कहा **हे नचिकेता! तीन प्रकार की अग्नियों की पूजा करने का नाम स्वर्ग कहा गया है।** तीन प्रकार की अग्नि गार्हपत्य, गृहपत्य और वैश्वानर यह तीन प्रकार की अग्नि हैं इन अग्नियों का पूजन करने वाला ही मानों देखो स्वर्ग का स्वामी बनता है। **सबसे प्रथम ब्रह्मचर्य में गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन होता है,** गार्हपत्य में ब्रह्मचारी तपता है अपने ब्रह्मचर्य से और वह विद्या को देखो सजातीय बनाता है और सजातीय बना करके उसका अध्ययन करता है विद्या का और उस समय देखो याग में परणित हो जाता है और आध्यात्मिक और भौतिक याग दोनो यागों में परणित हो करके ही मानों देखो अपनी विद्या का अध्ययन करता है और वह विद्वान देखो बुद्धिमता में प्रवेश होता है अपने में समाहित हो जाता है वह मानों देखो प्रथम अग्नि है। **द्वितीय अग्नि का नाम गृहपत्य नाम की अग्नि है** जिससे गृह ऊंचे बनते हैं जो भी माता-पिता बनना चाहता है वह अपने में यह विचार ले कि हमें देखो अपने विचारों को ऊंचा बनाना है और **गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करना देखो अपने गृह में याग करना है दर्शनों का अध्ययन करना है और जिस क्रियाकलाप को देखो माता-पिता करते हैं उसी क्रियाकलाप को पुत्र-पुत्रियाँ, सन्तानें करने लगती हैं।** जब एक सूत्र में सब हो जाते हैं क्रियाकलाप हो जाता है तो गृह स्वर्ग बन जाता है। वह गृहपत्य नाम की अग्नि है। **तृतीय अग्नि का नाम वैश्वानर है।** जिसमें बेटा! देखो गृह-स्थली को त्याग करके विद्यालयों में जो अग्नि प्रदीप्त है जो ब्रह्मचारियों को जो विद्या प्रदान की जाती है यह तीन प्रकार की अग्नियों की पूजा करने का नाम ही बेटा देखो स्वर्ग कहा गया है। ऋषि ने अपना सूक्ष्म, बेटा! मैं इसकी विवेचना तो कल ही करूंगा आज तो केवल तुम्हें परिचय दे रहा हूँ और परिचय यह कि ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में विद्यमान है और वह ब्रह्मचर्य का

जाओ पुत्र पिता के कक्ष में चले जाओ। जब वह पिता के कक्ष में पहुंचे माता की आज्ञा पा करके। आचार्य ने कहा आओ ब्रह्मचारी, वाजश्रवा ने कहा कहो नचिकेता। उन्होंने कहा हे पितृ। हमारा गोत्र मानों उद्दालक गोत्र है और उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए परन्तु किसी का वाक् मिथ्या नही हुआ। हे प्रभु! आप ने मुझे मृत्यु को कहा है मुझे मृत्यु को समर्पित कर दीजिए अन्यथा तुम्हारा वाक् मिथ्या हो जाएगा। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है वाजश्रवा ने विचारा हे नचिकेता तुम तो पितृभक्त हो अमृताम भूतम ब्रह्मणे व्रतम देवा मृत्यु-हे ब्रह्मचारी! जाओ तुम मृत्यु को चले जाओ।

नचिकेता का मृत्यु पर मनन

मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने नमस्कार करके चरण स्पर्श किए और यह कहा प्रभु! मैं मृत्यु को जा रहा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्मचारी ने कोई पाप नहीं किया था जो शरीर का विच्छेद हो जाता परन्तु देखो वह विचारने लगा एक वट वृक्ष का जब एक वट वृक्ष के नीचे विद्यमान हो करके विचार-विनिमय करने लगा और ऋषि ने भी कहा पिता ने मुझे मृत्यु को कहा है, मृत्यु है क्या? यदि मैं शरीर को त्यागने को मृत्यु कहता हूँ तो यह मृत्यु नहीं बनती। जब जिसका निर्माण हुआ उसका विच्छेद अवश्य है उसका रुपान्तर होना तो रुपान्तर को मृत्यु नहीं कहते। यदि शरीर और आत्मा का दोनो का विच्छेद होना ही यह भी मृत्यु नही बनती परन्तु मृत्यु क्या है जो पिता ने कहा है कि तुम मृत्यु को चले जाओ। अब ब्रह्मचारी चिन्तन करने लगा। उनके द्वारा बेटा देखो अमृतम प्रजापति आ पहुंचे। प्रजापति ने कहा हे बालक नचिकेता क्या विचार कर रहे हो ब्रह्मचारी। उन्होंने कहा प्रभु! मैं मृत्यु के सम्बन्ध चिन्तन कर रहा हूँ क्योकि मातम ब्रह्मणे व्रतम-माता के गर्भ से एक बाल्य का जन्म होता है और जन्म हुआ उसका निर्माण करने वाला चैतन्य देव है। माता के अन्धकार कूप में उसका निर्माण होता है। माता लोरियो का पान कराके योग्य बना देती है परन्तु देखो वह

मृतम ब्रह्मे मृत्युम ब्रहा मैं मृत्यु को पिता ने कहा है कि तू मृत्यु नहीं बन पाती। परन्तु देखो निर्माण को करने वाला कोई और है रुपान्तर हो रहा है। यह जगत की जब प्रलय होती है तो रुपान्तर हो जाता है ऐसे मानव शरीर का भी निर्माण हुआ है तो उसका रुपान्तर हो जाता है। ब्रह्मचारी जब यह चिन्तन करने लगा क्या मृत्यु तो बनता ही नहीं। हां विचार-विनिमय करते हुए उन्होंने कहा प्रभु! मृत्यु कहते किसे हैं? आचार्य भी विद्यमान हो करके दोनों चिन्तन करने लगे। उन्होंने कहा मेरे विचार में तो ऐसा वेद में एक मन्त्र आता है तान्यम भुतम अज्ञानम ब्रह्मे क्रतम देवत्वाम अज्ञानम भूतम यह वेद का मन्त्र कहता है कि **अज्ञान का नाम मृत्यु है।** ब्रह्मचारी तुम अज्ञान को त्याग करके देखो प्रकाश में आ जाओ तो देखो मृत्यु समाप्त हो जायेगी मृत्यु तुम्हारे निकट नहीं आयेगी क्योंकि अंधकार का नाम ही तो मृत्यु है। ब्रह्मचारी ने विचार किया कि उन्होंने विचारा मुझे ऐसे महापुरूष के द्वारा जाना चाहिए जिसने मृत्यु को विजय कर लिया है।

नचिकेता का यमाचार्य के गृह में प्रवेश

मेरे प्यारे! देखो वह भ्रमण करते वहां से गमन करते हैं और भ्रमण करते वह यमराज मानों देखो यमाचार्य के गृह में पहुंचे। यमाचार्य देखो गृह में नहीं थे उनकी पत्नि शकुन्तका थी। जब शकुन्तका के चरणों को उन्होंने स्पर्श किया और ब्रह्मचारी ने कहा मातेश्वरी आचार्य कहां हैं, मृत्यु को विजय करने वाले आचार्य कहां है? माता ने कहा ब्रह्मचारी तुम आओ अन्न जल का पान करो आचार्य कहीं भ्रमण करने गये वह आते होंगे। परन्तु देखो उसने कहा नहीं जब तक मैं अन्न जल का पान नहीं करूंगा जब तक मझे आचार्य का दर्शन नहीं हो जाएगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियम ब्रहे वह बालक नचिकेता द्वार पर विद्यमान हो गये। सात वर्ष का ब्रह्मचारी बेटा द्वारपाल बना हुआ है। तीन रात्रि और तीन दिवस हो गये हैं और तीन दिवस के पश्चात् यमाचार्य गृह में आये। पत्नि व्याकुल हो रही थी। पत्नि ने कहा,

शकुन्तका ने कहा प्रभु! हमारी तो मृत्यु हो गई है। यमाचार्य ने कहा देवी मैंने मृत्यु को विजय किया मृत्यु कैसे हो गई? उन्होने कहाँ कि हमारे यहाँ वेद-मन्त्र में आया है अजागम अथग प्रमाण ही देवाम अस्सुतम देवो प्रमाण ही देवाम अस्सुतम देवो प्रमाण ब्रीहि गृह पुन्याय ब्रह्मे देवा वेद का मन्त्र कहता है कि एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म की जिज्ञासा वाला गृह में यदि अन्न जल से पीड़ित रह जाता है तो गृह-आश्रम में रहनें वालो के पुण्य ले जाता है और वहां अपने पाप कर्मों को त्याग देता है। यह वेद का मन्त्र कहता है। प्रभु! तो हम तो इसलिए पापी है। हम गृह हैं, गृह स्वामिनी हूँ और मेरा विचार यह बना है कि ब्रह्मचारी अपने पुण्य छोड़ हमारे पुण्य ले जा करके पाप को त्याग देता है। उन्होंने कहा नहीं देवी यह वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है परन्तु मैं प्रयास करूंगा।

नचिकेता यमाचार्य संवाद

बेटा! देखो उन्होंने देवी को त्याग करके वह नचिकेता के समीप पहुंचे। नचिकेता ने ऋषि को दृष्टिपात करके उनके चरणो की वन्दना की और वन्दना करते हुए अमृतम प्रसन्न हो गये। उन्होने कहा हे नचिकेता तुम्हें तीन रात्रि तीन दिवस हो गये हैं तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ तुम तीन वरों में जो इच्छा हो वह स्वीकार करो। बालक नचिकेता ने कहा हे पितर! हे यम मृत्यु को विजय करने वाले देवता मैं यह चाहता हूँ कि मेरे पिता ने जिस अभिलाषा से सर्व द्रव्य देखो वह याग में हूत कर दिया है वह मेरे पिता की इच्छाएं पूर्ण हो जानी चाहिए। यमाचार्य यथार्थ और देखो तथास्तु कह करके शान्त हो गये। उन्होंने कहा मैं भगवन द्वितीय वचन में चाहता हूँ क्या यह अमृतम यह मानों देखो स्वर्ग क्या है? ऋषि ने कहा अमृतम स्वर्गम ब्रह्मा देवम और तीसरा वचन मेरा यह कि आत्मा शरीर को त्याग करके कहां जाता है? मेरे पुत्रों! बालक नचिकेता ने जब गुरू से यह प्रश्न किया तो गुरू बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा नचिकेता तुम यहां अन्न

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णादत्त जी महाराज (पूर्व श्रङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनॉक 26 फरवरी 2012 से 4 मार्च 2012 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रो के सहित सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम

दिनॉक 26 फरवरी 2012 रविवार से 4 मार्च 2012 रविवार तक

प्रातः 6:15 बजे से 6:30 बजे तक	ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)
प्रातः 6:30 बजे	ओ३म् ध्वजा रोहण **(केवल प्रथम दिन)**
प्रातः 7:00 बजे से 10:00 बजे तक	देव यज्ञ (चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ)
प्रातः 10:00 बजे से 11:00 बजे तक	वेद प्रवचन व ईश भजन
दोपहर 1:30 बजे से 2:45 बजे तक एवं	भजनोपदेश
सायं 3:00 बजे से 6:00 बजे तक	यज्ञ वेदोपदेश सन्ध्या एवं भजन
रात्रि 7:30 बजे से 9:15 बजे तक	भजनोपदेश

यज्ञ के शुभ अवसर पर भोजन व उपवास की व्यवस्था है।

श्री गाँधीधाम समिति (पजी.)

अध्ययन करता हुआ वह गार्हपत्य नाम की अग्नि को अपने में चेता रहा है विद्या के द्वारा, अपने प्राणायाम और साधना के द्वारा मेरे प्यारे! देखो वही बुद्विमता ब्रह्मणे अपने ब्रह्मवर्चोसी को अपने में महान बनाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो नचिकेता को जब यमाचार्य ने कहा कि इन तीन प्रकार की अग्नियों का पूजन करने का नाम याग है और वह इस प्रकार का याज्ञिक पुरुष होता है वही मानों देखो तीन प्रकार की अग्नियों को जानने वाला स्वर्ग का स्वामी बनता है

तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ मैं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और परिचय क्या है कि वाजश्रवा ने ऋषि-मुनियों के समीप विद्यमान हो करके यह कहा कि प्रभु! मैं याग करना चाहता हूँ मैं अपने को स्वर्ग में ले जाना चाहता हूँ मैं अपने को मोक्ष में ले जाना चाहता हूँ। तो मानों देखो नचिकेता ने यमाचार्य से ये ही प्रश्न किया कि मेरे पिता की इच्छा पूर्ण। हो तो मुनिवरों देखो हमारे यहां दार्शनिक पुरुषों ने इसका बड़ा महत्व और इसका वर्णन किया है और यमराज उसे कहते हैं जो मृत्यु को विजय कर लेता है। यम कहते हैं मृत्यु को, जो मृत्यु को विजय करता है वही यमराज कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने मृत्यु को विजय किया और याम अमृतम नचिकेता को उन्होंने अपना मन्तव्य प्रगट कराया। तो बेटा आज मैं इतना ही वाक् तुम्हें प्रगट करूंगा। शेष चर्चाए तुम्हे मैं कल प्रगट करूंगा। तीन प्रकार की अग्नि और मानों देखो कुछ और भी चर्चाऐं, आत्मा की चर्चाऐं मैं कल प्रगट करूंगा। आज का विचार अब यह सम्पन्न होने जा रहा है।

आज के विचारों का अभिप्राय यह कि प्रत्येक मानव को अपने में अपनेपन को जान करके अपने में समाहित हो जाना चाहिए और अपनी महानता में रमण करना चाहिए। जिस महानता में रमण करने वाला मानव देखो अपनी मानवीयता में रत्त हो करके अपनी मानवीयत्व में रम बम ब्रह्मा वाचस्सुतम देवत्वाम वह देवताओं को प्राप्त हो जाता

है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः कि **प्रत्येक मानव को अपने में अपनेपन को विचारना चाहिए प्रभु का चिन्तन करते हुए प्रभु की सृष्टि को निहारना चाहिए कि वह प्रभु कितना रचनाकार है, कितना देवत्व को प्राप्त हो रहा है।** यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम्माहम् प्राची रथम्।
ओ३म् रथम् मन्थाः प्राची वरूणश्चमाम् आपा रथम् ब्रह्मणः।
अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनॉक 26-जून-1992
समय : रात्रि 8 बजे।
स्थान : श्रीमति शर्बती देवी,
खुर्रमपुर, गाजियाबाद।

❐❐

उद्‌बोधन

मैं यज्ञमान के लिए कामना प्रकट कर रहा हूँ कि हे प्रभु! ऐसे महान् सुन्दर भोले महापुरुषों की इच्छाओं को प्रभु ही पूर्ण करते रहते हैं। मैं तो यह कहा करता हूँ कि गृह में सुन्दर-सुन्दर पुत्रों का जन्म हो, याज्ञिक पुरुषों का जन्म हो, उनका गृह सम्पन्नता में परणित होना चाहिए। आज मेरा हृदय कितना प्रसन्नता में परणित हो रहा है। मैं उन विचारों में नहीं जाना चाहता हूँ। हमारे विचार केवल यह है कि हम प्रत्येक स्थान में विचारणीय बनें। जब हम किसी की निन्दा करने पर तत्पर होते हैं तो उस समय यह विचार-विनिमय करना है कि हम किस प्रकार के हैं, हमारा चरित्र कैसा है? जब हम यह विचारेंगे अपने ऊपर तो उस समय मानव को यह प्रतीत होगा कि तू तो महान् गढढेले में है, तू दूसरों के गढेले की चर्चा क्यों प्रकट कर रहा है। आज का समाज इस प्रकार का बन गया है, आज के समाज में यह प्रवृत्ति आ गई है कि दूसरो की निन्दा में आनन्दित रहता है, अपनी निन्दा को श्रबण नहीं करना चाहता, उसे उसमें कष्ट होता हैं अरे मानव! तूने किसी काल में यह विचारा है कि जब तुम स्वयं उन शब्दों से जो तेरे प्रतिकूल होते हैं, तेरे चरित्र का जो व्याख्यान देता है तुझे उसमें कष्ट होता है, तो क्या दूसरे प्राणी को कष्ट नहीं होगा। तेरी वाणी क्या दुर्गन्धि में परणित नहीं हो जाती है तब तू स्वयं दृष्टिपात नहीं कर पाता। सूक्ष्म-सूक्ष्म वाक्य को ले करके मानव अपनी कागा प्रवृत्ति बना लेते हैं। तो यह कागा प्रवृत्ति मानव की नहीं होनी चाहिए। व्यापक विचारों से मानव में मानववाद होना चाहिए जिससे मानवीयता ऊँची बने, राष्ट्र ऊँचा बने। मानव के लिए तो राष्ट्र होता है, प्राणी मात्र के लिए राष्ट्र होता है।

पुष्प संख्या 13 प्रवचन दिनाँक 9 नवम्बर 1969

पूज्यपाद-गुरुदेव

फरवरी 2012/यौगिक प्रवचन

मासिक सहयोगी

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री मैं. ओम् बायो इन्डस्ट्रीज धीर खेड़ा हापुड़ (श्री सुरेश त्यागी व श्री विवेक त्यागी)	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजि.	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएडा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, होशियारपुर, पंजाब	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोयड़ा	100 रुपये

सूचना

सभी आजीवन सदस्यों व अन्य मानुभावओं से नम्र निवेदन है कि उनके पास जो पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों के कैसेट व विडियों कैसेट जो उनके घर पर हुए प्रवचनो से सम्बन्धित है उनकी एक प्रति बनाकर यज्ञ के शुभ अवसर पर लाक्षागृह बरनावा में समिति को प्रदान करने का कष्ट करे। जिसका खर्चा प्रति प्राप्त करते समय समिति प्रदान कर देगी।

वैदिक अनुसंधान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व प्रकाशन मंत्री के पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

डॉ. मधुसूदन, ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली 110017

दूरभाष : (0) 11-26498737

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.)

वर्ष 40 अंक 473
फरवरी, 2012

मूल्य :
पाँच रूपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 10-2-2012